उद्धरण :- प्रश्नांकित पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक "विद्यापति की पदावली" से उद्धृत है। इसके कवि मैथिल कोकिल विद्यापति ठाकुर जी हैं।

कविपरिचय :- विद्यापति आदिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं विद्यापति मैथिली भाषा में "पदावली" का सृजन किये हैं जिसके कारण इनका वैशिष्ट्य हुआ। इनकी रचना में वीररस, शृंगाररस तथा भक्तिरस की त्रिवेणी बहती है। इनकी रचना है, मैथिली में "पदावली" संस्कृत में "पुरुष परीक्षा" तथा अवहट्ठ में कीर्तिलता। कीर्तिपताका।

प्रसंग :- मैथिल कोकिल विद्यापति अपने पदावली। राधा कृष्ण के संयोग, वियोग दोनों पक्षों का अत्यंत मार्मिक चित्र खींचे हैं। यहाँ राधा जी द्वारा दूसरे सखि को अपने प्रियतम के बारे में कहा गया है। राधा जी कहती हैं :-

सप्रसंग अर्थ :- हे सखि हमारे प्रियतम बहुत दूर देश रहते हैं। कोई भी उनका कुशल संदेश मुझको नहीं कहता, लेकिन जहाँ भी रहें अच्छे से रहें, लाख वर्ष जियें। हम अभागी हूँ, इसलिए उनका प्यार नहीं मिला मेरे कर्म से ही ब्रह्मा भी विपरीत हो गए हैं इसलिए पिछले का प्रेम प्रियतम भूल गये। हृदय का जो दुःख है वह वाण के समान है। दूसरा आदमी दूसरे का दुःख नहीं समझता। कवि विद्यापति कहते

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी विभाग
डॉ. एस. के. जी. डी.
कॉलेज लालगंज
कल्याणपुर
बलराम कुमार

है जयराम से कि ~~देवता~~ ब्रह्मा का लिखा कोई टाल नहीं सकता। ईश्वर जो कर्म में लिखकर भेजते हैं वह भुगतना ही पड़ता है।

भावार्थ :- विद्यापति यहाँ राधा जी का हृदय की महत्ता को निखारे हैं। राधा जी कहती है कि हमारे प्रियतम जहाँ भी हो लाख वर्ष जिये। हमारे प्रियतम का इस समय कोई दोष नहीं है। मैथिल कोकिल यहाँ भारत की नारी को, त्यागपना, समर्पणशीलता, दया, मयी, सहीसहीष्णुता ~~क्षमता~~ का गुण निखारने का कार्य किये है। भारतीय संस्कृति को सुसंस्कृत बनाने में विद्यापति सहायक है।

कठिन शब्दों का अर्थबोध :

i. बिहि - ब्रह्मा
ii. माधव - कृष्ण
iii. पुरुबपिरीत - पहले का प्रेम
iv. बेदन - दुःख
v. आनक - दूसरा

i. पंडित विश्वनाथ मिश्र
ii. शिवनाथ मिश्र
iii. रामाशंकर मिश्र
iv.

प्रश्नांकित पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक आधुनिक हिन्दी काव्य सरिता" से उद्धृत है। इस पुस्तक के संकलनकर्ता।

बलराम कुमार

Scanned with CamScanner